Comparison

तुलना

Question: But for fear, we would have no respect for our parents. How can you say fear is destructive?

प्रश्न : यदि हममें डर न हो तो हमारे मन में अभिभावकों के प्रति आदर की भावना भी नहीं रहेगी। आप ऐसा क्यों कहते हैं कि भय होना विनाशकारी है?

Krishamurti: Do you respect your parents out of love or out of fear? I am saying, 'How can one have respect if there is fear?' Such respect is not respect at all; it is an apprehension, a fear. But if you have love, you win respect, whether it is your father or the governor or a poor coolie. Is that not simple? Respect born of fear is destructive, false, and has no meaning.

कृष्णमूर्ति : आप अपने अभिभावकों का आदर भय के कारण करते हैं या प्रेम के कारण? मैं यह कह रहा हूं कि यदि मन में किसी के प्रति भय है तो उसके प्रति आदर कैसे हो सकता है? इस प्रकार का आदर, आदर तो कदापि नहीं होता, यह डर का ही एक रूप है, भय ही है। परंतु यदि आपके मन में प्रेम है तो आपमें आदर भी अनायास होता है, फिर वह आपके पिता के प्रति हो या राज्य के बड़े से बड़े अधिकारी के प्रति हो या किसी निर्धन कुली के ही प्रति क्यों न हो। क्या यह समझना मुश्किल है? जो सम्मान भय के कारण होता है वह हानिकर होता है, नकली होता है और बेमानी होता है।

Question: Why do we feel a sense of fear when we do not succeed?

प्रश्न : जब हमें सफलता नहीं मिल पाती तब हममें भय की भावना क्यों आ जाती है?

Krishanamurti: Why do you want to succeed? You do something, and in itself it is beautiful it is sufficient. Why do you want to have the feeling that you have succeeded? You have pride, and then you say, 'I must not have pride.' Then you try to cultivate humility—which is all absurd. But if you say, 'I am doing it because I love to do it,' then there is no problem.

कृष्णमूर्ति : आप सफल होना क्यों चाहते हैं? आप कुछ करते हैं, और इसे करना ही अपने-आप में सुंदर है, पर्याप्त है। आप यह भावना मन में रखना ही क्यों चाहते हैं कि आपको सफलता पानी ही है? आपमें गर्व है और फिर आप यह कहने लगते हैं, ''मुझमें गर्व होना ठीक नहीं है''। और तब आप नम्र होने की चेष्टा करने लगते हैं--जो कि बिलकुल ही निरर्थक बात है। परंतु यदि आप यह कहें 'यह मैं इसलिए कर रहा हूं क्योंकि ऐसा करना मुझे प्रिय है' तो समस्या पैदा ही नहीं होती।

Question: What are the qualifications of an ideal student?

प्रश्न : एक आदर्श विद्यार्थी में कौन-कौन सी योग्यताएं होती हैं?

Krishnamurti: I hope there is no ideal student. Look what you have asked! You want an ideal student; you picture his image, his ways of behaviour, his ways of conduct, and you want to imitate him. You do not say, 'Here I am. I want to find out about myself. I want to find out how to live, but not according to a picture.' You see, the

कृष्णमूर्ति : कोई आदर्श विद्यार्थी न ही हो तो बेहतर है। आप इस पर ज़रा गौर कीजिए कि आप क्या पूछ रहे हैं! आप एक आदर्श विद्यार्थी चाहते हैं, आप उसकी प्रतिमा को, उसके आचरण करने के तौर-तरीके को, उसके व्यवहार करने को अपनी कल्पना में चित्रित करते हैं और आप उसकी नकल करना चाहते हैं। आप यह नहीं कहते, ''मैं इस प्रकार का हूं, मैं अपने बारे में पता लगाना चाहता हूं। मैं यह जानना चाहता हूं कि जिया कैसे जाता है,

moment you have an ideal, you become false; you say, 'How wrongly I have been brought up!' The ideal becomes much more important than what you are.

पर किसी काल्पनिक चित्र के अनुरूप नहीं।'' कृपया देखिए जैसे ही आप किसी आदर्श को अपने समक्ष रखते हैं आप तत्क्षण झूठे हो जाते हैं, तब आप कहते हैं, ''मेरी शिक्षा-दीक्षा कितने गलत ढंग से हुई है''। आपके द्वारा रखा गया आदर्श ही तब जो आप वस्तुतः हैं, उसकी अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

What is important is what you are, not what the ideal is, not the ideal student or his qualifications. You are important, not an ideal. In understanding yourself, you will find out how false these ideals are. Ideals are the inventions of the mind which runs away from what the thing actually is. What is important is not an ideal but to understand what is. There is a beggar. What is the good of talking to him about an ideal? You have to understand him, to help him directly. The ideals of a perfect society are all fictitious and unreal, and it is the old people's game to talk about these ideals. What is is the actual, and it has to be faced and understood.

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आप क्या हैं-- महत्त्व इसका नहीं है कि आदर्श क्या है, न तो आदर्श विद्यार्थी का कोई महत्त्व है और न ही उसकी योग्यताओं का कोई महत्त्व है। आप महत्त्वपूर्ण हैं, आदर्श नहीं। अपने आपको समझ लेने के साथ ही आप यह भी जान लेंगे कि ये आदर्श कितने अवास्तविक हैं। वस्तुतः जो है, उससे पलायन करने वाला मन ही आदर्शों का आविष्कार किया करता है। आदर्श महत्त्वपूर्ण नहीं होता, बल्कि महत्त्वपूर्ण यह है कि जो है उसे समझा जाए। एक भिखारी आपके पास आता है। उससे किसी आदर्श की चर्चा करने का क्या अर्थ है? अच्छा तो यह होगा कि आप उसे समझें। उसकी प्रत्यक्ष रूप से मदद करें। किसी परिपूर्ण समाज के आदर्शों की चर्चा करना काल्पनिक और अवास्तविक है, और इन आदर्शों की बात करना बूढ़े लोगों का प्रिय खेल है। जो है वह प्रत्यक्ष है और उसका सामना किया जाना चाहिए और उसे समझा जाना चाहिए।

January 6, 1954

६ जनवरी, १९५४